(४) रोम-रोम में नेमिकुंवर...

रोम-रोम में नेमिकुंवर के उपशम रस की धारा;
राग-द्वेष के बन्धन तोड़े, वेश दिगम्बर धारा॥ टेक॥

ब्याह करने को आये, सङ्ग बराती लाये;
पशुओं को बन्धन में देखा, दया सिन्धु लहराये।
धिक-धिक जग की स्वारथ वृत्ति कहीं न सुक्ख लघारा॥ 1॥

राजुल अति अकुलाये, नौ भव की याद दिलाये;
नेमि कहें जग में न किसी का, कोई कभी हो पाये।
रागरूप अङ्गारों द्वारा जलता है जग सारा॥ 2॥

नौ भव का सुमिरण कर नेमी, आतम तत्त्व विचारे;
शाश्वत ध्रुव चैतन्यराज की, महिमा चित्त में धारें।
लहराता वैराग्य सिन्धु अब भायें भावना बारा॥ 3॥

राजुल के प्रति राग तजा है, मुक्ति वधु को ब्याहें;
नग्न दिगम्बर दीक्षा गह कर, आतम ध्यान लगाये।
भव बन्धन का नाश करेंगे, पावें सुख अपारा॥ 4॥